छत्तीसगढ़ भारती

कक्षा – 8

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे –> **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें –> उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

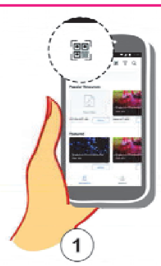

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

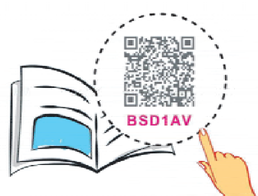

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

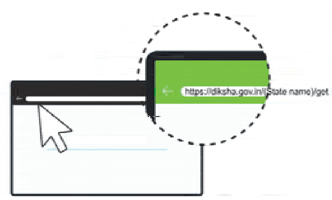

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

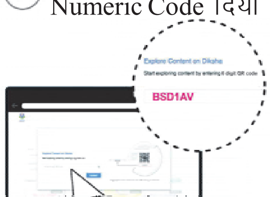

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

AIU8FD

प्रकाशन वर्ष 2024

सहयोग	एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर डॉ. हृदयकांत दीवान, (विद्या भवन, उदयपुर) प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय) अजीम प्रेम जी फाउनडेशन
समन्वयक	डॉ. विद्यावती चन्द्राकर
संपादक	डॉ. सी.एल. मिश्र, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

लेखक–मंडल

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, डॉ. बृजमोहन इष्टवाल, गजानंद प्रसाद देवांगन, राजेन्द्र पाण्डे, श्री दिनेश गौतम, विनय शरण सिंह, कुमार अनुपम, श्रीमती सीमा अग्रवाल, डॉ. रचना अजमेरा, श्रीमती उषा पवार, श्री धीरेन्द्र कुमार, श्री शोभा शंकर नागदा, डॉ. रचना दत्त, श्री कार्तिकेय शर्मा।	डॉ. जीवन यदु, डॉ. पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह, डॉ. मांघी लाल यादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी, श्री गणेश यदु, श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी, श्रीमती मैना अनंत।

आवरण पृष्ठ एवं लेआउट डिज़ाइन	–	रेखराज चौरागड़े
फोटोग्राफ	–	एस. अहमद (अंतिम आवरण पृष्ठ)
चित्रांकन	–	राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर उन सभी कवियों, लेखकों या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में समाहित की गई हैं, अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा अवश्य घरेलू भाषा के माध्यम से ही दी जाए। इस महत्वपूर्ण अनुशंसा को साकार रूप देने के लिए ही ''छत्तीसगढ़ी भाषा में पाठ'' तैयार किए गए।

मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा के हिमायती शिक्षाविदों में महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद भी रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद यद्यपि छत्तीसगढ़ी भाषा के पाठों को नई पाठ्यपुस्तकों में स्थान मिला पर उनकी संख्या कम थी। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के प्रस्ताव पर शासन ने नए शिक्षा सत्र से हिन्दी की प्रचलित पाठ्यपुस्तकों के एक चौथाई पाठों को मातृभाषा में देने का निर्णय लिया। शासन ने यह कार्य एस.सी.ई.आर.टी. को सौंपा जिसके निर्देशानुसार स्थानीय भाषा छत्तीसगढ़ी भाषा में पाठों की रचना की गई।

मातृभाषा में अध्यापन से बच्चों की झिझक समाप्त होती है और वे खुलकर अपने विचार व्यक्त कर पाते हैं। शाला के नए परिवेश में आए बच्चों के लिए स्कूली भाषा की समस्या उनके लिए जिस अजनबीपन को लेकर आती है, मातृभाषा में शिक्षण उसे सहजता से दूर कर देता है।

मातृभाषा में संप्रेषण सहज होने से विद्यार्थियों के लिए व्यक्तित्व विकास व आत्मगौरव के अवसर जुटा देता है। आज का युग ज्ञान–विज्ञान का युग है, ज्ञान–विज्ञान को यदि बच्चे की अपनी भाषा के साथ जोड़ दिया जाए और उनकी स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया जाए तो बच्चे के लिए यह प्रगति की राह सुलभ करवाता है।

प्रारंभ में छत्तीसगढ़ भारती के वर्तमान पाठों में से एक चौथाई पाठ उनकी अपनी मातृभाषा में दिए गए हैं। धीरे–धीरे मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की ओर हम आगे बढ़ेंगे।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक में मातृभाषा के पाठों में आए हिन्दी के शब्दों को हमने ज्यों का त्यों ले लिया है। इसका कारण यह है कि ज्ञान–विज्ञान की भाषा में हिन्दी ने संस्कृत के शब्दों का प्रयोग जिस तरह किया है, उसी तरह मातृभाषा में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग हो ताकि मातृभाषा उसे आत्मसात कर अधिक समृद्ध हो तथा विज्ञान जैसे विषय की पढ़ाई में बच्चों को आसानी हो। प्रारंभिक तौर पर इसे मनोरंजक बनाकर और स्थानीयता से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है ताकि बच्चों को यह अधिक रुचिकर लगे। इस संबंध में प्रारंभिक फीडबैक हमारा उत्साह बढ़ाने वाला है तथा इस संबंध में आने वाले आपके सुझावों का स्वागत है। ये सुझाव क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकों को बेहतर बनाने में हमारी सहायता करेंगे। पुस्तक को तैयार करने में हमें जिन विद्वानों का सहयोग प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से मिला, परिषद् उनके प्रति आभारी है।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

प्राक्कथन

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की नई किताब बनाने का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र और जिज्ञासु पाठक बनाना है। परिषद् की पुस्तकों ने यह भी रेखांकित किया है कि भाषा सीखने–सिखाने का दायित्व सिर्फ भाषा की पुस्तक का ही नहीं है वरन् अन्य विषयों की भी इसमें भूमिका है। सामाजिक अध्ययन, विज्ञान व गणित की पुस्तकों को पढ़कर समझने के प्रयास से, स्वतंत्र व समृद्ध पाठक बनाना संभव होता है। पाठ्यपुस्तकों के अलावा विद्वानों द्वारा रचित साहित्य, अन्य प्रसिद्ध लेखकों द्वारा लिखी सामग्री के साथ–साथ बच्चों के लिए अन्य कहानी, कविता, नाटक आदि की पुस्तकों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के अनेक स्वाभाविक अनुभवों के बारे में सोचना, उनका गहराई से विश्लेषण करना व इन सबको एक–दूसरे से बाँटना न सिर्फ भाषायी समझ बढ़ाता है वरन् कई और महत्वपूर्ण क्षमताएँ भी प्रदान करता है।

कक्षा आठवीं में पढ़नेवाले बच्चों के भाषायी ज्ञान को और समृद्ध बनाना है। इसमें समझने व अभिव्यक्त करने, दोनों तरह की क्षमताएँ शामिल हैं। अच्छे लेखकों, कवियों और साहित्यकारों द्वारा लिखी कहानी, कविता, निबंध, नाटक आदि साहित्य की विधाएँ तो हैं ही, साथ–ही–साथ ऐसी पुस्तकें सोचने–समझने के तरीकों को भी समृद्ध बनाती हैं। इन सभी की पढ़ने में रुचि पैदा करना ही एक प्रमुख लक्ष्य है। ज्यादातर भाषा–शिक्षण व साहित्य का उद्देश्य बच्चे के विकास व समाज के साथ उसके संबंध को गहरा करना व उसके सोचने व जीवन दर्शन को वृहद् करना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे अच्छे साहित्य को पढ़ें–लिखें और उस पर बातचीत करें। बच्चों का पुस्तक की सामग्री के साथ संबंध गहरा हो, उनके बीच एक सतर्क पाठक का रिश्ता बने। इसके लिए वे पाठों पर आधारित नए प्रश्न बनाएँ व अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर सामग्री में प्रस्तुत विचारों पर टिप्पणी करें।

कक्षा आठवीं के बच्चों से यह भी अपेक्षा है कि वे पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत विचारों तथा घटनाओं के वर्णनों आदि के बारे में सोचें–विचारें, सवाल करें और अपनी राय बनाएँ। यह सब करना कुछ हद तक संभव है। कक्षा आठवीं में हम यह भी अपेक्षा करते हैं कि बच्चे समूहों में अब ज्यादा बार खुद पढ़कर व चर्चा करके सीखें और अपनी समझ को पुख्ता करें। हमारी कोशिश है कि भाषा की पुस्तक के माध्यम से नए अनुभवों व विचारों से रू–ब–रू होने का व उन्हें अहसास करने का एक जीवंत अनुभव मिले।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

इस पुस्तक को तैयार करने में शिक्षाविदों, शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों का सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके बावजूद पुस्तक में सुधार करने और जोड़ने की संभावनाएँ तो सदैव रहेंगी।

इस पुस्तक को और बेहतर बनाने के लिए आप अपने बहुमूल्य सुझाव परिषद् को भेजेंगे, ऐसी हमारी उम्मीद है।

शुभकामनाओं के साथ।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों के लिए

छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के मार्गदर्शन में कक्षा आठवीं के लिए बनी हिन्दी की नवीन पुस्तक आपके सामने है। पुस्तक बनाने में राष्ट्रीय शिक्षाक्रम पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 को भी ध्यान में रखा गया है। पुस्तक में विषयगत एवं विधागत विविधता के साथ–साथ बच्चों की जिंदगी से जुड़े अनुभवों को ध्यान में रखकर सामग्री को संकलित किया गया है। ये पाठ साहित्य की विविध विधाओं–कविता, कहानी, वर्णन, नाटक, निबंध, पत्र, डायरी, आत्मकथा, जीवनी,संस्मरण, यात्रा वर्णन आदि के रूप में संकलित हैं। साहित्य की सभी विधाओं को शामिल किया जा सके, ऐसा कर पाना इस स्तर पर और एक पुस्तक में संभव नहीं है। अतः यह अपेक्षा है कि आप अन्य विधाओं की पुस्तकों को पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित करेंगे। पुस्तक में संकलित पाठों पर काम करने के लिए बच्चों के बीच संवाद, चर्चा, समूह चर्चा, मौखिक कथन, वाचन, अभिनय, समीक्षा, मौलिक लेखन, सृजनकार्य आदि गतिविधियाँ प्रस्तावित की गई हैं। हमारी आपसे यह अपेक्षा है कि आप पूर्णतया इसी पुस्तक पर निर्भर न रहें। पुस्तक पर निर्भरता उतनी ही हो जितनी की जरूरत हो।

हमारी अपेक्षा है कि इस पुस्तक के उपयोग से बच्चे भाषा में रुचि बना पाएँगे और कक्षा 8 के अंत तक वे अपने मन से नई–नई कहानियाँ, कविताएँ, नाटक आदि पढ़ने लगेंगे और उन पर परस्पर चर्चा कर सकेंगे। भाषा सीखने–सिखाने के बारे में सोचते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे आस–पास के वातावरण व दुनिया को जानना व समझना चाहते हैं। हमें यह प्रयास करना है कि उनकी दृष्टि व अनुभूति अधिक संवेदनशील व गहरी हो। सामाजिक यथार्थ के बहुत बड़े हिस्से को गहराई से देखने की क्षमता हमें साहित्य से ही मिलती है। इसलिए हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त हम उन्हें कुछ अन्य सामग्री पढ़ने को दें।

इस स्तर के बच्चे स्वतंत्र रूप से पढ़ने–लिखने में आत्मनिर्भर हो चुके होते हैं। अब इन बच्चों को दी गई सामग्री पर स्वतंत्र रूप से काम करने के अवसर और नई चुनौतियाँ दिए जाने की जरूरत है। आपकी भूमिका एक मददगार के रूप में होनी है। सीखना स्वयं करने से ही होता है, अतः बच्चों को इसके लिए अधिक–से–अधिक मौका मिले।

इस स्तर के बच्चों की भाषायी क्षमताओं को आगे बढ़ाने हेतु यह पुस्तक एक आधार सामग्री के रूप में है। यहाँ उद्देश्य यह है कि बच्चे अच्छे लेखकों और कवियों द्वारा रचे गए साहित्य को पढ़ें और उस पर चिंतन मनन करें। भाषाशिक्षण का उद्देश्य बच्चों को एक अच्छा पाठक बनाने के साथ–साथ सोचने–विचारने, चिंतन करने, विचारों को विस्तारित करने, कल्पना करने तथा नई बातें खोजने, तर्क समझने आदि के लिए तैयार करना है।

यह भी अपेक्षा है कि बच्चा न सिर्फ पुस्तक की सामग्री को गहराई से समझकर उसकी विवेचना कर सके वरन् किसी भी सामग्री पर गहरे रूप से विचार करने व अध्ययन करने की क्षमता विकसित कर सके।

इस पुस्तक की पाठ्य–सामग्री में विविधता इसलिए रखी गई है कि बच्चे हर प्रकार की सामग्री का परिचय पा सकें व उसका रस ले सकें। इस पुस्तक में अभ्यास उदाहरणस्वरूप दिए गए हैं। आप इन्हें विस्तारित कर सकते हैं। कक्षा 5 तक की पुस्तकों में हमने प्रत्येक पाठ में नए प्रश्न बनाकर मौखिक रूप में परस्पर प्रश्न पूछने और उत्तर देने के अभ्यास करवाए हैं। इस पुस्तक में भी कई जगह यह गतिविधि कराने के लिए इंगित किया गया है। बच्चे भी सोचकर सवाल बनाएँ तो उनकी पढ़ पाने की क्षमता सुदृढ़ होगी।

बच्चों की पढ़ने की क्षमता बढ़ाने व पाठ के बारे में गहरे रूप से विचार करने की समझ पैदा करने के लिए आवश्यक है कि उसे सवालों के रूप में कुछ ऐसे स्रोत मिलें जो पाठ को समझने में उसकी मदद करें। पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न पाठ की समझ का एक हद तक मूल्यांकन कर सकते हैं। किन्तु इन प्रश्नों का वास्तविक उद्देश्य बच्चों में पढ़ने व समझने की एक कोशिश पैदा करना है। प्रश्नों के कुछ उदाहरण पाठ में दिए गए हैं; कृपया आप स्वयं पाठ पढ़ाते समय और भी प्रश्न बनाएँ।

बच्चों से भी प्रश्न बनाने का कार्य करवाएँ। शुरू में वे नए मौखिक प्रश्न बनाकर एक–दूसरे से पूछ सकते हैं। धीरे–धीरे ये सवाल गहरे होते जाएँगे। बाद में उन्हें लिखित प्रश्न बनाने के लिए भी प्रेरित करें। इनमें से कुछ तो सूचना आधारित प्रश्न हो सकते हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं। कुछ कार्यकारण संबंध वाले प्रश्न हो सकते हैं तथा कुछ कल्पनात्मकता व सृजनात्मकता वाले प्रश्न भी होंगे। इन प्रश्नों का जवाब बच्चे अपनी भाषा में लिखें तो ज्यादा अच्छा होगा। कुछ प्रश्न पूर्ण सामग्री को समझकर उसके आधार पर हो सकते हैं या उसका सार लिखने जैसे; और कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जो पाठ्य सामग्री में व्यक्त विचारों के बारे में टिप्पणी माँगें। अर्थ समझना पढ़ने का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है और उसी में पारंगत करना पुस्तक का एक लक्ष्य होगा।

कक्षा आठ में जिन अभ्यासों पर जोर दिया गया है, वे हैं –

- पढ़ी गई सामग्री का सार लिखना।
- सामग्री पर अपने अनुभवों के आधार पर टिप्पणी करना।
- सन्दर्भ से शब्दों को अर्थ देना व नए वाक्य बनाना।
- कहानी पढ़कर समझना और समूह में उस पर नाटक तैयार करना।
- दी गई सामग्री के आधार पर कल्पना करना, जैसे यदि ऐसा नहीं होता तो क्या होता।
- सामग्री में दिए गए घटनाक्रम, विवरण, कथन को आगे बढ़ाना व उसे और विस्तार देना।
- सामग्री में दिए गए तर्कों के आधार पर या उस जैसे तर्क सोचना व पाठ जैसे पैराग्राफ बनाना।

ये मात्र उदाहरण हैं। इनके अलावा भी और बहुत प्रकार के अभ्यास आप सोच सकते हैं। सरल पाठ पर आधारित सवाल बनाने में तो बच्चों को भी मजा आएगा।

इसके अलावा कुछ और बातें भी महत्वपूर्ण हैं। व्याकरण भाषा का हिस्सा है। वह भाषा को एक ऐसा ढाँचा देता है जिसके चलते हम एक दूसरे की बात समझ पाते हैं। व्याकरण का अहसास करना,उसके नियमों को खँगालना भाषा को समझने में मदद करता है। व्याकरण के अधिकांश नियम प्रयोग करते समय उभरते हैं। हम बच्चों को पाठ के कुछ वाक्य लेकर उनमें निहित नियम पहचानने को कह सकते हैं। इस पुस्तक में भाषातत्व और व्याकरण के अंतर्गत इसी प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। विराम चिह्नों का प्रयोग भाषा को समृद्ध बनाता है। केवल निर्धारित परिभाषाएँ व नियम याद करना व्याकरण नहीं है, वरन् भाषा को समझने व उसकी समृद्धि के अहसास की राह में कदम है।

कक्षा 6, 7 और 8 की पुस्तकों में हमने शब्दार्थ पाठ के अंत में भी दिया गया है तथा शब्दकोश के रूप में पुस्तक के अंत में दिए हैं। हमारा विचार है कि इससे बच्चों को शब्दकोश देखना आएगा। शब्दकोश में हमने जगह–जगह रिक्त स्थान छोड़े हैं और प्रत्येक वर्ण से प्रारंभ होने वाले शब्दों के अंत में चौखाने में कुछ शब्द डाले हैं। इन शब्दों को शब्दकोश के क्रम से उन रिक्त स्थानों में भरकर इनके अर्थ लिखने हैं। आपको यह देखना है कि बच्चे यह गतिविधि नियमित रूप से करें। ये शब्द अधिकांशतः ऐसे हैं जो वे पूर्व में पढ़ चुके हैं। जिन शब्दों के अर्थ बच्चे नहीं जानते, उन्हें आप बता सकते हैं। शब्द भंडार में वृद्धि करने के लिए यह गतिविधि लाभदायक सिद्ध होगी।

एक और बात कहना आवश्यक है। जब भी हम किसी पाठ को पढ़ते हैं तो उसमें छिपे भावार्थ की समझ सबके लिए एक जैसी नहीं होती। एक ही कहानी सबको अच्छी भी नहीं लगती और उसका अर्थ भी सब एक जैसा नहीं निकालते। किंतु पढ़ने वालों की सदैव यह कोशिश होनी चाहिए कि वह न सिर्फ अपनी समझ जानें व उसे व्यक्त करें, वरन् लेखक की बात उसके नजरियें से देख पाएँ और यह जान पाएँ कि लेखक क्या कहना चाहता है। बच्चों को इस तरह के प्रयास करने के मौके देना भी आवश्यक होगा।

आपके जो भी सुझाव हों और जो नए अभ्यास आप बनाएँ उन्हें हमें लिख भेजें।

धन्यवाद।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

7X4SHJ

कक्षा 8

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
1.	नई उषा	कविता	श्री सत्यनारायण लाल	01–04
2.	एक नई शुरुआत	कहानी	सुश्री कमला चमोला	05–11
3.	अब्राहम लिंकन का पत्र	पत्र	श्री अब्राहम लिंकन	12–15
4.	पचराही	निबंध	लेखक मंडल	16–20
5.	इब्राहीम गार्दी	कहानी	श्री वृंदावन लाल वर्मा	21–27
6.	जो मैं नहीं बन सका	व्यंग्य	डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी	28–34
7.	दीदी की डायरी	डायरी	संकलित	35–40
8.	एक साँस आजादी के	कविता	डॉ. जीवन यदु	41–43
9.	साहस के पैर	कहानी	श्री जयशंकर अवस्थी	44–48
10.	प्रवास	निबंध	श्री सालिम अली	49–55
11.	हमारा छत्तीसगढ़	कविता	श्री लखनलाल गुप्ता	56–59
12.	अपन चीज के पीरा	कहानी	संकलित	60–65
13.	विजयबेला	एकांकी	श्री जगदीश चंद्र माथुर	66–78
14.	आतिथ्य	आत्मकथा	श्री भदंत आनंद कौशल्यायन	79–84
15.	मनुज को खोज निकालो	कविता	श्री सुमित्रानंदन पंत	85–87
16.	बरसात के पानी ले भू–जल संग्रहण	निबंध	लेखक मंडल	88–92
17.	तृतीय लिंग का बोध	निबंध	लेखक मंडल	93–96
18.	ब्रज माधुरी	कविता	कविवर पद्माकर / हरिश्चंद्र / बेनी	97–100
19.	कटुक वचन मत बोल	निबंध	श्री रामेश्वर दयाल दुबे	101–105
20.	मिनी महात्मा	कहानी	श्री आलम शाह खान	106–112
21.	सिखावन	कविता	संकलित	113–117
22.	हिरोशिमा की पीड़ा	कविता	अटल बिहारी वाजपेयी	118–121
23.	यातायात सुरक्षा (सड़क सूचना चिह्न)			122
	स्वच्छता के जरिए स्वास्थ्य की ओर एक कदम			123
	शब्दकोश			124–136

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति **(Learning Outcomes)**
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें– ■ अपनी भाषा में बातचीत, चर्चा तथा विश्लेषण करने के अवसर हों। ■ जीवन से जोड़कर विषय को समझने के अवसर हों। ■ प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। ■ समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने–देने प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। ■ हिंदी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो। ■ अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। ■ अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों; जैसे–शब्द खेल, कविता, गीत, चुटकलें पत्र आदि। ■ सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। ■ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों; जैसे–अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों	बच्चे – LH801- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे– पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई बातों को पढ़कर चर्चा करते हैं। LH802- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉक पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। LH803- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। LH804- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं। LH805- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं। LH806- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों; जैसे–जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं; जैसे– अपने मोहल्ले के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना। LH807- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं; जैसे– अपने आस–पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन–सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं–रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती? LH808- विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोतार्ज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं। LH809- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। LH810- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। LH811- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं; जैसे– वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।

में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।	LH812- विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते है। LH813- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री; जैसे–शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं। LH814- अपने पाठक और लिखने के उद्‌देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते है। LH815- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बननेवाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं। LH816- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते है; जैसे–कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना। LH817- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं; जैसे–स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत। LH818- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते है; जैसे–विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) कोई अनुभव लिखना। LH819- दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं; जैसे–सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि। LH820- विविध कलाओं, जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे– कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति। LH821- अपने पाठक और लिखने के उद्‌देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं। LH822- अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं; जैसे– कविता, कहानी, निबंध आदि। LH823- पढ़कर अपरिचित परिस्थितयों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बननेवाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित/ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

विषय–सूची (Contents)

अध्याय	पाठ का नाम	LOs
1.	नई उषा	LH803,LH810,LH813,LH815,LH816,LH822
2.	एक नई शुरुआत	LH803,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
3.	अब्राहम लिंकन का पत्र	LH802,LH803,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
4.	पचराही	LH803,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH820,LH822
5.	इब्राहीम गार्दी	LH803,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
6.	जो मैं नहीं बन सका	LH803,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
7.	दीदी की डायरी	LH803,LH806,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816, LH818,LH822
8.	एक साँस आजादी के	LH803,LH805,LH810,LH813,LH815,LH816,LH822
9.	साहस के पैर	LH803,LH808,LH810,LH813,LH814,LH816,LH822
10.	प्रवास	LH801,LH810,LH811,LH813,LH814,LH815,LH816,LH820, LH822
11.	हमारा छत्तीसगढ़	LH803,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
12.	अपन चीज के पीरा	LH803,LH807,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816, LH822
13.	विजयबेला	LH803,LH805,LH808,LH810,LH811,LH812,LH813,LH814, LH815,LH816,LH822
14.	आतिथ्य	LH803,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
15.	मनुज को खोज निकालो	LH803,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
16.	बरसात के पानी ले भू–जल संग्रहण	LH801,LH802,LH803,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816, LH821,LH822
17.	तृतीय लिंग का बोध	LH803,LH806,LH810,LH811,LH813,LH814,LH815,LH816, LH822
18.	ब्रज माधुरी	LH803,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
19.	कटुक वचन मत बोल	LH803,LH810,LH811,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
20.	मिनी महात्मा	LH803,LH808,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822, LH823
21.	सिखावन	LH803,LH804,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816,LH822
22.	हिरोशिमा की पीड़ा	LH802,LH803,LH807,LH810,LH813,LH814,LH815,LH816, LH822,LH823

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter	Sub Topic	Level 1	Level 2	Level 3	Level 4
After the lesson, students will be able to : **पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे:–**		**remember, recall, list, locate, label, recite** **याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना।**	**understand, explain, illustrate, summaries, match** **समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना।**	**apply, organize, use, solve, prove, draw** **प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना।**	**evaluate, hypothesize, analyze, compare, create, categories** **मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, वर्गीकरण करना।**
अध्याय–1 **नई उषा**	पठन, सस्वर वाचन, शब्दार्थ, पर्यायवाची, प्रश्नोत्तर, तत्सम शब्द विशेषण अलंकार कविता लेखन	• शब्दार्थ • पर्यायवाची • विशेषण	• अभ्यास के प्रश्नों का उत्तर दे पायेंगे। • तत्सम–तद्भव शब्दों को समझेंगे • अनुप्रास अलंकार को समझ पायेंगे। • कविता की व्याख्या करना।	• कविताओं की कुछ पंक्तियों को देखकर उसके भाव को समझेंगे और भाव देखकर कविता की पंक्ति को पहचानेंगे।	• इसी तरह के भाव से मिलती–जुलती कविता का सृजन कर सकेंगे। • अपने अनुभव (किसी दृश्य का अवलोकन कर) लिख पायेंगे।